प्राचीन भारतीय साहित्य दर्षन में षिक्षा– एक ऐतिहासिक विष्लेषण

डॉ0 राम प्रवेश सिंह

0;k[;krk] इतिहास foHkkx]i!: egrk lkejh egkfo|ky; fcgkj'kjhQ]ukyank] fcgkj

(पाटलिपुत्रा विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत)

सार :- व्यक्ति संकल्पयुक्त प्रयास करते है। इस सन्दर्भ ब्राउडी द्वारा दी गई व्याख्या द्रष्टव्य है। भारतीय दर्षनों में ज्ञान शब्द वही अर्थ रखना है,जो कि व्यापक अर्थो में ''षिक्षा'' का होता है। भारतीय दर्षनों में केवल सूचना अथवा तथ्यों के लिए ''ज्ञान'' शब्द का प्रयोग नहीं होता। अमर–कोष में ज्ञान तथा विज्ञान षब्दों का अन्तर स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि ज्ञान का विषय मुत्ति है, जबकि विज्ञान का षिल्प और विविध शास्त्र दूसरे शब्दों में ज्ञान वह है जो मनुष्य को उत्रत करता है, तथा मुक्ति के लिए मार्ग प्रषस्त करता है, जबकि व्यावहारिक जीवन में प्रयोग के लिए जो कुछ जाना जाता है अथवा सीखा जाता है, वह विज्ञान कहलाता है। हम व्यापक अर्थो में षिक्षा की व्याख्या की करते है तो वह षिक्षा मानव –नियन्त्रित नहीं हो सकती। इसके अन्तर्गत बालक के विकाष की निष्चित नहीं हो सकती। इसके अन्तर्गत बालक के विकाष की निष्चित दिषा का निर्धारण नहीं किया जा कता, क्योंकि या षिक्षा तो आनुषंगिक होती है। इसके अन्तर्गत बालक पर पड़ने वाले वांछित–अवांछित, चाहे– अनचाहे सभी संस्कारों का समावेष हो जाता है। इसके अन्तर्गत परिवार, समाज, राज्य,, धर्म, संस्थान,मित्र–मण्डली, चलचित्र,जनषिक्षा के संचार–माध्यम आदि सभी प्रकार के अनौपचारिक अभिकरणों का षिक्षा पर पड़ने वाला प्रीाव समसचिष्ट हो जाता है तथा विधालय की भूमिका गौण जो जाता है। उक्त व्यापक अर्थ लेने पर षिक्षा के उद्देष्य, षिक्षा–विकाष की पूर्व–निर्धारण कठिन हो जाता है, अतः सुविधा की दृष्टि से षिक्षा ऐसी प्रकिया है, जिसके द्वारा अपरिपक्व बालकों तथा युवजनों की निर्धारित दिषा की ओर प्रगति करवाने में समाज के परिपक्व

प्रस्तावना :- अतएव व्यापक तथ्ज्ञा सामान्य अर्थो में षिक्षा अधिगम के मार्ग–दर्षन तथा नियन्त्रण द्वारा अनुभव की पुनर्रचना करने का सुविचारित प्रयास है।षिक्षा के दो प्रधान पक्ष है– प्रथम तो चिन्तन– पक्ष ताथा द्वितीय व्यवहार–पक्ष। अनुभव अथवा व्यवहार करते समय अनेक समस्यसएँ हमारे सम्मुख उपस्थित होती है, इन समस्याओं पर चिंतन करके उनके आधार पर सिद्वान्तों का पिरुपण करना दर्षन का कार्य होता है। इसके अतिरिक्त षिक्षा भी जीवन का एक पक्ष है, और जीवन के मौलिक प्रष्नों की व्याख्या दर्षन करता है। इस दृष्टि से भी दर्षन तथा षिक्षा एक दूसरे से जुड़े हुए है।

विवेचन :- प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का कोई न कोई दर्षन अवष्य होता है चाहे व्यक्ति उसके सम्बंन्ध से सचेतन हो या न हो जैसा कि अल्डुस हक्सले लिखता है।दर्षन हमारी भावनाओं तथा मनोदषाओं को प्रतिबिम्बित करता हैए और ये भावनाएँ हमारे कार्यो को नियन्त्रित करती है। षिक्षा का एक प्रमुख कार्य स्वस्थ मनोवृतियों का निर्माण करना है, अतः दर्षन से षिक्षा की प्रेरणा ग्रहण करनी ही पड़ती है।

भारत में दर्षन का उद्गम असन्तोष या अत्प्ति से माना जाता है हम वर्तमान से असंतुष्ट होकर श्रेष्ठतार की खोज करना चाहते है, यही खोज दार्षनिक गवेषण कहलाती है। षिक्षा–छर्षन का उद्गम भी कुछ इसी प्रकार होता है। षिक्षा प्रणाली से हमें असंतोष है, अतृप्ति है। हमें लगता है कि वर्तमान षिक्षा हमारी आकांक्षाओंके अनुरूप नहीं है। निहित स्वाथ्र तथा , गैर जिम्मेदारी के तत्व जोर पकड़त्रते जा रहे है। षिक्षित बेकारों की संख्या बढ रही है। षिक्षा द्वारा हमारे नैथ्तक विकास नहीं हो पा रहा है। ऐसी अराजकता की स्थिति में दर्षन हमारी क्या सहायता का सकता है ? किसी षिक्षा सुधार का लागू करने के लिए चार प्रमुख बातों की आवष्यकता होती है।

(क) तात्कालिक अवस्था का पर्याप्त ज्ञान।

(ख) उन सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का पर्याप्त ज्ञान, जिनमें षिक्षण संस्थाएँ चलती है।

(ग) उक्त स्थिति में सुधार लाने के लिए क्या उपाय काम में लाने चाहिएँ तथा उसके किस प्रकार की षक्ति चाहिए?

(घ) षिक्षा के सम्बन्ध की उपयुक्त अवधारणा तथा षिक्षा द्वारा अपेक्षित उपलब्धियाँ।

षिक्षा–दर्षन की व्याख्या करने में दो शब्द–समुच्चयों का प्रयोग किया जाता है–प्रथम शैक्षिक – दर्षन तथा द्वितीय षिक्षा का दर्षन । प्रथम उक्ति के अनुसार दर्षन जीवन के विभिन्न पक्षों को स्पर्ष करता है ताकि षिक्षा भी जीवन का एक महत्त्पूर्ण पक्ष है, जो दर्षन द्वारा सबसे अधिक प्रभावित होता है। इस मान्यता के अनुसार दार्षनिक सिद्धन्तों एवं मान्यताओं का षिक्षा के लिए अभिप्रेतार्थ निकलता है, उसका विवेचन किया जाता हैं। दूसरे शब्दों में शैक्षिक–दर्षन,दर्षनषास्त्र की अनुप्रयुक्त शाखा है। इस विचारधार के अनुसार व्याख्याता के सम्ममुख मूल सन्दर्भ दर्षन होता है, तथा विचार्य बिन्दु षिक्षा के विभिन्न अंक जैसे

पाठ्यक्रम, अनुषासन,छात्र आदि होते है। षिक्षा की समस्याओं का विचार करने के लिए दर्षनकी तर्कनापरक विधियों का प्रयोग किया जाता है।

"श्रेयस् एवं प्रेयस् भिन्न-भिन्न हैं। ये दोनों भिन्न-भिन्न प्रयोजनों से मनुष्य को बाँधते हैं। इन दोनों में से श्रेयस् को स्वीकार करना • चाहिए। जो प्रेयस् को चुनता है वह लक्ष्य-भ्रष्ट होता है। श्रेयस् एवं प्रेयस् दोनों ही मनुष्य के पास अग्रसर हाते है। बुध-जन दोनों का विचार करके उनमें अन्तर देखते हैं। प्रेयस् के स्थान पर श्रेयस् को चुनते हैं, पर्न्तु मूर्ख लोग सांसारिक आन्द के लिए प्रेयस् का चुनाव करते है। "उपनिषदों में "प्रेयस्" की उपेक्षा नहीं है, अपितु "प्रेयस्" को "श्रेयस्" के निमित प्रयुक्त करने की सलाह दी गई है। आत्मा, जो आनन्दस्वरूप है, उससे विगलग करके जो "श्रेयस्" है, यह त्याज्य है।तैतिरीयोपनिषद् में पुनः एक बार अपने विद्यार्थी को दीखान्त भाषण देते | हुए सलाह दी गई है - "भूत्यै न प्रमतिव्यम्। कुशलान्नप्रमदितव्यम्।" अर्थात् हित तथा कल्याण की उपेक्षा मत करना । दूसरे शब्दों में छात्र को यह उपदेश दिया गया है कि आत्महित भी जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

निष्कर्ष :- षिक्षा–छर्षन का उद्गम भी कुछ इसी प्रकार होता है। षिक्षा प्रणाली से हमें असंतोष है, अतृप्ति है। हमें लगता है कि वर्तमान षिक्षा हमारी आकांक्षाओंके अनुरूप नहीं है। निहित स्वाथ्र तथा , गैर जिम्मेदारी के तत्व जोर पकडत्रते जा रहे है। षिक्षित बेकारों की संख्या बढ रही है। षिक्षा द्वारा हमारे नैथ्तक विकास नहीं हो पा रहा है। ऐसी अराजकता की स्थिति में दर्षन हमारी क्या सहायता का सकता है षिक्षा का कार्य केवल परिकल्पनाएँ करना तथा मान निर्धारण करना ही नहीं है,अपितु प्रचलित षिक्षा प्रणाली तथा शैक्षिक अवधारणाओं की अलोचना करना भी है। शैक्षिम प्रत्ययों का स्पष्टीकरण तथा प्रचलित अर्थो की विवेचना इसी भूमिकों के अन्तर्गत आते है। षिक्षा में हम अनेक शब्दों,परिभाषाओं विष्वासों आदर्षो, तथा प्रचलित अर्थो की विवेचना इसी भूमिका के अन्तर्गत आते है। षिक्षा में हम अनेक शब्दों,परिभाषाओं, विष्वासों, आदर्षो, तथा अवधारणाओं को लेकर चलते रहते है दर्षन का एक प्रमुख कार्य इन प्रत्ययों एवं अवधारणाओं का विष्लेषण तथा करना भी है।

References:

01. Saiyidanin K. G. The Humanist Tradition in India. Education Thought, Bombay. Asia Publishing Hoous, 1966.
02. The Complete Works of swami Vevekanand in 7 Vols. Almora: Advaita Ashrama, 1947.
03. Besant, Annie, Essentials of Indian Education.Dr. Besant's Speches in the central Hindu College,1899-1972.
04. Besant, Annie: Education as a National Duty, 1903.
05. ,, ,, Education for the New era 1919.
06. ,, ,, Education in the Light of Theosophy, Adyar Pamphlet No. 16.
07. Swami dayanand, satyartha Prakash.
08. Sri Aurobindo, A System of National Eucatioon, Calcutta Arya Publishing Hous, 1946.
09. Bhattachary P. K., A Scheme of Education, Pondicherry : Sri Aurobino Ashram, 1952.
10. Pavitra, Education, and the Aim of Human Life, Pondicherr: Sri aurobindo ashram, 1961.
11. Gandhi M. K.m, Basic Education, Almedabad, Navijivan Publishing House,1951.
12. Mukerii H. N. Education forfulness, Bombay: Asia Publishing House 1962.
13. Tagorer. N.: Sadhna; Mc- Millan & Co.
14. Chaube S.P.: Recent education Philosophies in Indina. Agra : Ram Prasadand Sons 1967.
15. Kabir Humayun, Indian Philosophy of education, Bomby: Asia Publishing House, 1962.
16. Porn GIRO 3TO PIETĄ affach 3TTEIT, ofege: farct Te 3tch TGH 1972.
17. Sharma chandra dhar: a critical survey of Indian Philosophy Delhi, Motiaal Banarsidas, 1964.
18. Gandhi M. K.: To the Students, Varanish: Sarva seva sanch.
19. Bhave Vinoba: Shikshan Vichar, varanshk: Sarva seva Sangh.
20. radhakrishna S. Bhagwat geeta, London: Routledge & Kegan Paul.
21. Hiriyanna M: Essentials of Indian Philosophy, London: George Allen & Unwin, 1956.
22. Broudy Harr, Building a Philosophy of Education (Indian edition) New Dehli: Prentice Hallof Indian (Private) Ltd. 1956.
23. Division of Internaitonal Education, International Relations Brach: Education inthe U.S. SR. Bulletin 14, Washington: Department of Health /educaiton & welfar, 1957.
24. Blackham H. J. Six Existentialish Thinkers, London: Routledge & Kegan Paul Ltd. 1952.
25. Park Joe (Ed) Selected reding in the Philosology of Educaiton Newyour; The Mc-Millan company, 1963.
26. James, william, a New Name fior Some Old Ways of Thinking Newyour longma Green 1960.

27. Bulter J. D., rourimupnes, Newyourl: Harper and Bros. 1951
28. Weber, C.O. Basic Philosophies of Education. New your: Rinehart &/co. Inc.1950.
29. Bogoslovsky B.B. The /Ideal School, New Your: The Macmillan 1936.
30. N.S.S.E. Philosophy of Education 41st and 54th Year Books University.